REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 6 | MARCH - 2025

भारतीय सिनेमा में भाषा का सम्प्रेषण एवं प्रभाव

डॉ. राजेश सिंहकुशवाहा
एसोसिएट प्रोफेसर, भारतीय जन संचार संस्थान पश्चिम क्षेत्रीय परिसर, अमरावती.

शोध सारः

भाषा हमारे संप्रेषण का माध्यम ही नहीं, अपितु हमारे भावबोध का साधन भी है। हम भाषा के माध्यम से ही सोचते हैं और भाषा के माध्यम से ही किसी विचार को समझते और समझाते हैं। हमारा संपूर्ण चिंतन वस्तुतः भाषा का ही चिंतन है। मानव मन की सृजनात्मक शक्ति की अनुपम देन के रूप में यह भाषा ही बाह्य जगत् और हमारे भावबोध के बीच एक सेतु का काम करती है। भाषा बोलने वालों की संस्कृति को अपने हर शब्द से बयान करती है। भाषा सिनेमा, टीवी, रेडियो, अखबार या इंटरनेट पर हो, अपने में बहुत ही प्रभावशाली है। साहित्य की अभिव्यक्ति का एक माध्यम सिनेमा है। यह कहना तर्कसंगत ही है कि सिनेमा भी समाज का दर्पण है। सिनेमा अनुभव और अन्वेषण का माध्यम है, इसकी अपनी भाषा एवं सम्प्रेषण कला है। दृश्य माध्यमों में भी भाषा के बिना दृश्यों को समझना मुश्किल हो जाता है चाहे मुद्रित माध्यम हो या श्रव्य माध्यम, भाषा के प्रयोग में अत्यधिक सावधानी और कुशलता की जरूरत होती है। सिनेमा में सफल संदेश सम्प्रेषण में भाषा का प्रतिस्थानापन्न कोई नहीं है। सिनेमा युवाओं के विचारों, मूल्यों और व्यवहार को विशेष रूप से प्रभावित करता है। यह युवाओं को आदर्श और रोल मॉडल प्रदान कर सकता है। सिनेमा एक ऐसी तकनीक है जिससे भाषा प्रसार तेजी से ही नहीं होता है वरन प्रभावशाली तरीके से होता है।

प्रमुख बिन्दुःभाषा, सिनेमा, सम्प्रेषण, संस्कृति, लोक संचार और वैश्वीकरण।

प्रस्तावना

सिनेमा की भाषा का सामाजिक प्रभाव बहुत गहरा और बहुआयामी होता है। यह सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि समाज के विचारों, मूल्यों और व्यवहारों को प्रभावित करने की शक्ति रखता है। सिनेमा समाज की संस्कृति को दर्शाता है और उसे आकार भी देता है। यह लोगों को उनकी सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं और मूल्यों से परिचित कराता है। सिनेमा

विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद और समझ को बढ़ावा दे सकता है। यह सांस्कृतिक रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों को भी मजबूत कर सकता है, या उन्हें चुनौती दे सकता है।

सिनेमा लोगों के बोलने के तरीके, शब्दावली और भाषा के उपयोग को प्रभावित कर सकता है। यह नए शब्दों और संवाद को लोकप्रिय बनाता है। सिनेमा भाषा के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान को व्यक्त करता है। सिनेमा सामाजिक मुद्दों को उजागर करता है और जागरूकता बढ़ाता है। यह लोगों को सामाजिक समस्याओं के बारे में सोचने और चर्चा करने के लिए प्रेरित करता है। यह सामाजिक परिवर्तन के लिए एक प्रभावी एवं प्रयोजनपरक साधन हो सकता है।

अध्ययन का उद्देश्यः

भारतीय सिनेमा में भाषा के सम्प्रेषण और प्रभाव का यह अध्ययन एक बहुआयामी क्षेत्र है जो न केवल भाषाई विश्लेषण करता है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं को भी शामिल करता है। अध्ययन में यह भी शामिल है कि सिनेमा कैसे सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने और लोगों की सोच को प्रभावित करने में मदद करता है। इस अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित बिन्दुओं पर केंद्रित हैः

- भारतीय भाषाओं के सिनेमा में चित्रित भाषाई विविधता
- सिनेमा में सम्प्रेषित भाषाएं और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण
- भारतीय भाषाओं के विकास में सिनेमा का योगदान

शोध विधिः

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए वृहद् स्तर पर सिनेमा, विविध प्रकार के साहित्य एवं समाचार सामग्री का पुनरीक्षण किया गया है जिसमें भारतीय भाषाओं की फिल्में, समाचार पत्र-पत्रिकाएं, टी.वी. चैनल और न्यूज पोर्टल भी सम्मिलित हैं। प्रविधि के रूप में अवलोकन और अंतर्वस्तु विश्लेषण का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए भारतीय सिनेमा और सम्बंधित साहित्य को आधार बनाया गया है।

भारतीय सिनेमा में भाषा का सम्प्रेषण एवं प्रभाव का विश्लेषणः

एक भाषा सिर्फ भाषा नहीं होती है और न ही सिर्फ बात पहुंचाने का साधन होती है बल्कि यह समाज का एक अभिन्न अंग है और अपनी सभ्यता की प्रतिनिधि होती है। प्रत्येक भाषा अपनी संस्कृति को अपने प्रत्येक शब्द से दर्शाती है। भाषा सिनेमा, टीवी, रेडियो, समाचार-पत्र या ऑनलाइन माध्यम पर हो, अपने में बहुत ही प्रभावी होती है। आज के सामाजिक परिवेश में जनमाध्यमों का महत्व बढ़ गया है और लोग उसे बेहद विश्वसनीय भी मानते हैं। सिनेमा इनमें से एक बहुत ही सार्थक और सशक्त संचार का माध्यम है। भारतीय समाज पर सिनेमा का असर कितना है, इससे तो सभी वाकिफ हैं। संसद से सड़क तक के लोगों में सिने कलाकारों के प्रति दीवानगी है। एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि सिनेमा अपनी भाषा में हो तो फिर मत पूछिए, उसमें रूचि और भी बढ़ जाती है।

सिनेमा की भाषा का मतलब यह नहीं है कि किसी देश या क्षेत्र विशेष की भाषा, जिसमें फिल्म का निर्माण हुआ है। हर फिल्म अपने आप में व्यापक अर्थ रखने वाली एक विश्वव्यापी समग्र कला है। "सिनेमा कला और विज्ञान, कल्पना और यंत्र,

व्यक्ति और समष्टि के संयोग-समायोजन से विकसित ऐसी कला है जिसमें समाज की कला यात्रा का हर आयाम समन्वित हो गया है। साहित्य-चित्रकला-वास्तुकला-संगीत-नृत्य-नाटक, कौन सा कला रूप है जो सिनेमा में शामिल नहीं है।"[1] फिल्मों को किसी देश या भाषा समुदाय की परिधि में बांधा नहीं जा सकता है। किसी भी भाषा को भले हम न जानते हों लेकिन उस भाषा में बनी फिल्म को देखकर हम उस कथा और परिवेश को समझ जाते हैं। "फिल्मों की अपनी एक विशेष भाषा होती है जो विभिन्न दृश्यों को एक श्रंखलाबद्ध रूप में देखने से समझ में स्वतः आ जाती है, हां इसमें संवादों, गीत-संगीत और पार्श्व संगीत की सहायता से बातें और अधिक स्पष्ट और प्रभावशाली हो जाती हैं।"[2] यह तो स्पष्ट है कि सिनेमा अनुभव और अन्वेषण का माध्यम है, इसकी अपनी भाषा एवं सम्प्रेषण कला है।

सिनेमा दृश्यों पर आधारित एक शिल्प है। दृश्यों के माध्यम से ही जीवन के विविध रंगरूप का परिचय मिलता है। "यह स्थापित सच है कि फिल्म दृश्य दर दृश्य विकसित होती है। इसे सिनेविद पुडोविकिन ने 'दृश्य़दृश्य' विकास की प्रक्रिया कहा था। वहीं इसे सिनेविद आइजेन्स्टाइन ने 'दृश्य×दृश्य' विकास की प्रकिया कहा। इसमें खतरा यही है कि यदि एक दृश्य शून्य हुआ तो पूरी फिल्म के शून्य होने का खतरा होता है।"[3] भाषा वस्तुतः संकेत व्यवस्था है। सिनेमा में दृश्य और भाषा मिलकर संदेश का अर्थ व्यंजित करते हैं। यहां तक कि दृश्य माध्यमों में भी भाषा के बिना दृश्यों को समझना मुश्किल हो जाता है चाहे मुद्रित माध्यम हो या श्रव्य माध्यम, भाषा के प्रयोग में अत्यधिक सावधानी और कुशलता की जरूरत होती है।

भाषा मानव जाति की सबसे अमूल्य सम्पत्ति है क्योंकि भाषा का सम्बन्ध जीवन से है और उसका प्रयोग इतना यांत्रिक और सहज होता है कि उसकी ओर हमारा ध्यान आकृष्ट नहीं होता है। जीवन धारा होने के साथ भाषा हमारी संस्कृति की पहचान भी कराती है। समुदाय विशेष की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को जितनी सहजता से उस समुदाय की भाषा में व्यक्त किया जा सकता है उतना अन्य भाषा में संभव में नहीं है। वैज्ञानिक कसौटी पर देखा जाय तो भाषा ही मानवीय व्यवहार को सही एवं सटीक ढंग से परिलक्षित करती है। "भाषा वस्तुतः एक ऐसी मानवीय विशेषता है जो विशिष्ट है और जहां अनुकरण भी सर्जनात्मकता के साथ सामने आता है। भाषा हमारे स्मृतिकोश और चिंतन प्रक्रिया का भावबोध और विचार अभिव्यक्ति का (यानी बातचीत के साथ सोचने-समझने और समझाने का) साधन होने के साथ-साथ बाह्य संसार और भावजगत के बीच तादात्म्य स्थापित करती है।"[4]

भाषा संदेश के सम्प्रेषण का ऐसा माध्यम है जिसका इस्तेमाल सदियों से मनुष्य करता आ रहा है। "भाषा वानर को नर और नर को इन्सान बनाने यानी प्राकृतिक अवस्था से सभ्यता-संस्कृति तक पहुंचाने का निर्णायक माध्यम रही है।"[5] लेकिन भाषा के पहले और समांतर भी कई अन्य रूप संदेश भेजने के मौजूद रहे हैं। मसलन चित्र ऐसा ही एक माध्यम है जिसके द्वारा भी संदेश प्रेषित किए जाते हैं। शारीरिक संकेत भी संदेश के वाहक हो सकते हैं। जैसे हाथ के इशारे से आने-जाने के लिए कहना। गर्दन हिला कर स्वीकृति देना या इंकार करना। चेहरे के भाव भी संदेश के परिचायक होते हैं क्योंकि इसके भाव से खुशी या नाराजगी जाहिर हो जाती है। सिनेमा में हम दृश्यों से बहुत सारी बातें समझ जाते हैं। लेकिन इन सबके बावजूद यह स्वीकार करना पड़ेगा कि सफल संदेश सम्प्रेषण में भाषा का प्रतिस्थानापन्न कोई नहीं है। "भारत जैसे बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक एवं बहुजातीय देश में समाज की सहजभाषायी सम्प्रेषण-व्यवस्था में कहीं भी अवरोध की स्थिति नहीं मिलती। यहां एक मातृभाषा के साथ एकाधिक भाषा-रूपों एवं शैलियों का प्रयोग सहज है। बहुभाषा-प्रयोग की यह स्थिति हमारी सामाजिक संस्कृति, भाषागत सहिष्णुता और इतिहास समर्थित प्रामाणिकता की परिचायक है।"[6]

"सिनेमा ललित कलाओं का कोलाज है। सिनेमा, साहित्य के निकट है परन्तु कथा प्रस्तुतीकरण के लिए भाषाई दृष्टिकोण से सिनेमा और साहित्य की शैली एक दूसरे से भिन्न है।"[7] किसी भी सिनेमा को देखने के लिए थिएटर या मल्टीप्लेक्स में जाना होता है जहां बैठे दर्शक सामने विशाल परदे पर प्रोजेक्ट द्वारा प्रक्षेपित बिम्बों को देखते हैं। ये बिम्ब गतिशील होते हैं और ऐसा प्रतीत होता है मानो जीवन में जो कुछ घटित होता है उसे ही हम हुबहू परदे पर देख रहे हैं। सिनेमा में दृश्यों के साथ आवाज का भी प्रयोग किया जाता है लेकिन दृश्य की प्रधानता होती है और आवाज की भूमिका अनुवर्ती होती है। "भारतीय भाषायी कोश के संश्लिष्ट 'संपूर्ण भाषिक संसाधन' में सामाजिक व्यवहार में बहुबोलीपरकता (ब्रज, अवधी, मैथिली आदि); बहुशैलीपरकता(हिंन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी और हिंग्लिश); तथा बहुभाषिकता(हिन्दी, अंग्रेजी) की स्थिति स्पष्ट दिखाई देती है।"[8] यह ही प्रमुख वजह है कि सिनेमा चाहे मुख्यधारा का हो या क्षेत्रीय सभी में भाषाओं का कॉकटेल जरूर होता है।

हिंदी भाषा की अखिल भारतीय पहचान बनाने में आजादी के आंदोलन का जितना हाथ रहा है तो जनमाध्यमों का भी कम योगदान नहीं है और उसमें भी हिन्दी सिनेमा विशेषरूप से। कहने का तात्पर्य यह है कि सिनेमा एक ऐसी तकनीक है जिससे भाषा प्रसार तेजी से ही नहीं होता है वरन प्रभावशाली तरीके से होता है। विगत कुछ दशकों से इस तकनीक का उपयोग क्षेत्रीय भाषा में भी देखने को मिल रहा है, प्रतिफल यह है कि हिंदी भाषी क्षेत्रों में मुख्यधारा सिनेमा की उपस्थिति को क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्मों से जबरदस्त चुनौती मिल रही है। इसके साथ ही मनोरंजन के बाजार में अन्य बोलियां भी घुसपैठ कर अपनी जगह बना रही हैं। इसकी मूल वजह है कि "संस्कृति का मर्म अपनी ही मातृभाषा में चरितार्थ हो सकता है। भाषा चाहे कोई भी हो, उसका हमेशा एक दुहरा चरित्र होता हैः यह संप्रेषण का माध्यम होने के साथ-साथ संस्कृति की वाहक होती है।"[9]

जैसे साहित्य में भाषा का महत्व होता है वैसे ही सिनेमा में स्थान विशेष का महत्व होता है। किसी अंचल विशेष की कथा को कहने उस आंचलिक भाषा को वैसी सहजता होती है जैसी की किसी बल्लेबाज को घरेलू मैदान पर। यही बात सिनेमा और स्थानिक परिवेश पर भी लागू होती है। इसकी सामाजिक विशिष्टता का अपना ही तर्क होता है। "दर्शकों के साथ इस स्पेस का बड़ा तरल संबंध होता है। जैसे-जैसे स्थान विशेष, उसका नेटवर्क और उसकी गतिशीलता के रूप बदलते रहते हैं वैसे-वैसे यह संबंध भी बदलता रहता है। प्रादेशिक भाषाओं में सिनेमा इस बात की उपज है कि वह अपनी जमीन से जुड़कर ही अपनी सार्थकता सिद्ध कर सकता है। कथा कहने के लिए निर्देशक को अपनी जमीन पर ही उतरना पड़ेगा और तनावों व चुनौतियों का सामना करने लिए नए मुहावरे गढ़ने होंगे।"[10]

भारतीय भाषाओं और सिनेमा के संबंध को रेखांकित करते हुए फिल्म विशेषज्ञ लाल बहादुर ओझा का कहना है कि "हिंदी राष्ट्रभाषा बने इस कोशिश में क्षेत्रीय बोलियों के प्रिंट साहित्य का बहुत विकास नहीं हुआ, लेकिन तकनीक के विकास के साथ-साथ ऑडियो-वीडियो दोनों माध्यमों में बोलियों का कद बढा है। कभी एक सिनेकार ने कल्पना की थी कि कैमरे का इस्तेमाल कलम की तरह होना चाहिए। अब तकनीक ने इतना विकास कर लिया है कि लगभग कैमरे का उपयोग इस तरह से होने लगा है। मोबाइल कैमरे से फिल्म का निर्माण और उसके लिए प्रतियोगिता-पुरस्कार लगभग इस स्थिति की तसदीक करता है।"[11]

भारतीय भाषाओं का सिनेमा एक प्रकार से लोक संचार का ही परिमार्जित एवं परिवर्द्धित स्वरूप है। लोक संचार जहां जड़ों से जुड़ा रहता है वहीं भारतीय भाषाओं का सिनेमा भी अंचल विशेष की रीति-नीति, आचार-विचार, संबंध, संस्कार और संस्कृति के पर्यावरण में ही पल्लवित एवं पुष्पित होता है। लोक भाषा में लोक संस्कृति की अमावट की तरावट की झंकार होती है। भारतीय भाषाओं का या क्षेत्रीय सिनेमा का कथ्य लोकजीवन के समान ही व्यापक और सामाजिक संवेदनाओं से परिपूर्ण

होता है। लोककथा की भांति क्षेत्रीय सिनेमा के कथा की बुनावट भी अत्यंत सहज, सरल और सरस होती है। "लोककथाओं का रचना-संसार लोकजीवन के संसार से घुला-मिला होता है। उनकी सारी कल्पनाएं, मिथकीय धारणाएं, बिंब, प्रतीक लोकजीवन में निहित होते हैं। इसीलिए कपोल कल्पित कथाओं में जीवनानुभव तथा जीवन के अंश इस कदर मिले होते हैं कि उन पर सहज विश्वास हो जाता है।"[12]

साहित्य की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम सिनेमा है। यह कहना तर्कसंगत ही है कि सिनेमा भी समाज का दर्पण है। मुख्यधारा के सिनेमा का कैनवास बड़ा जरूर है परंन्तु उसके समक्ष सबसे बड़ी विवशता यह है कि उसे विशाल जनसमूह की विशाल जनाकांक्षाओं पर खरा उतरना होता है। प्रायः विविधता को समेटने में प्राथमिक विषय की जगह द्वितीयक या गौण विषय की प्रधानता हो जाती है। वहीं आंचलिक या क्षेत्रीय सिनेमा के सामने ऐसी समस्या नहीं आती है क्योंकि इस सिनेमा की जड़े लोक-संस्कृति से प्रस्फुटित हैं। "भोजपुरी लोककथा में लोकजीवन में निहित सामाजिकता का जो स्वरूप उपलब्ध होता है वह मनुष्य के अंदर निहित सत् रज् तम् गुणों का अंततोगत्वा सत् में परिणित होना ही चरम सत्य है, तथापि मनुष्य जीवन-पर्यन्त तमाम प्रकार के रज् और तम वाले कर्मों में लिप्त रहता है। जीवन का अनुभव और परिपक्वता उसे सत् के करीब ले जाती है और अंत में सारी दुर्वृत्तियां व सारा मलाल तिरोहित हो जाता है।"[13]

वर्तमान में मनोरंजन संसार का ज्वलंत प्रश्न है वैश्वीकरण। भारत में वैश्वीकरण के आगमन के साथ जनमाध्यमों का भी कलेवर बदला है। भारतीय सिनेमा की संस्कृति में आमूल-चूल परिवर्तन देखने को मिला है। वैश्वीकरण के दौर में ही जनमाध्यमों ने चोला ही नहीं बदला अपितु विदेशी जमीन पर भी अपनी पहंुच बनाई। वैश्वीकरण से जहां जनमाध्यमों की कमाई और पहंुच बढ़ रही है वहीं भारतीय भाषाओं का प्रसार भी तेजी से हो रहा है। भारतीय सिनेमा में देखा जाय तो इसमें जो नई लहर चल रही है वह अभूतपूर्व रूप से वेस्टर्न है। कहा तो यह भी जा रहा है कि यह हॉलीवुड के नक्शेकदम पर चल रहा है और सच भी है कि विदेशी जमीन पर भी भारतीय सिनेमा के लिए स्पेस बना है। वैश्वीकरण ने ना केवल सिनेमा की तकनीक बदली है बल्कि सिनेमा की भाषा भी बदली है। इसीलिए भारतीय सिनेमा में भी भाषा की कॉकटेल को परोसा जा रहा है।

आज भारतीय सिनेमा को देखने पर पता चलता है कि भाषा विज्ञान के आधार पर सिनेमाई भाषा में व्यापक परिवर्तन हो चुका है। हिन्दी सिनेमा में तो अंग्रेजी का मिश्रण हुआ है और यह हिंग्रेजी या हिंग्लिश के नाम से लोक प्रचलन में है परन्तु क्षेत्रीय सिनेमा की भाषा में अंग्रेजी के अलावा हिन्दी का भी रंग चढ़ा होता है। दर्शकों की रेंज भी विविधतापूर्ण है; चाहे वह ग्रामीण या नगरीय हो या उच्च वेतनभोगी या अल्प, भारतीय या विदेशी आदि। "पटकथा वास्तव में फिल्म का स्केलेटन है। फिल्म बनने की प्रक्रिया में इसमें मांसपेशियां, उदर, श्वास-तंत्र जुड़ते हैं और हंसती-बोलती-गाती फिल्म तैयार होती है।"[14] भाषा की कॉकटेल परोसने के पीछे प्रमुख वजह यह है कि सिनेमा एक ऐसी विधा है जो क्लॉस के लिए न होकर मॉस के लिए होती है।

निष्कर्षः

सिनेमा युवाओं के विचारों, मूल्यों और व्यवहारों को विशेष रूप से प्रभावित कर सकता है। यह युवाओं को आदर्श और रोल मॉडल प्रदान कर सकता है। अध्ययन में भारतीय भाषाओं के सिनेमा में चित्रित भाषाई विविधता स्पष्ट है। सिनेमा में सम्प्रेषित भाषाएं और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण के प्रयास का उल्लेख भी है। अध्ययन से भारतीय भाषाओं के विकास में सिनेमा के योगदान की पुष्टि होती है। सिनेमा माध्यम युवाओं को हिंसा, नशीली दवाओं और अन्य नकारात्मक व्यवहारों के प्रति

संवेदनशील बनाता है। भारतीय सिनेमा ने गरीबी, बेरोजगारी, पर्यावरण प्रदूषण, बालश्रम, जातिवाद, लैंगिक असमानता और अन्य सामाजिक मुद्दों पर प्रभावी ढंग से आवाज उठायी है।

संदर्भ स्रोतः

1. वर्मा, सदिच्छाः सिनेमा एक गंभीर जन परिघटना है, इतिहास बोध, इलाहाबाद, पृ0 106।
2. सिन्हा, प्रसूनः भारतीय सिनेमा, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 67।
3. आजमी, प्रभुनाथ सिंहः पटकथा का सच, मेधा प्रकाशन, दिल्ली पृ010।
4. वर्मा, विमलेश कांति व मालतीः भाषा, साहित्य और संस्कृति, ओरियंट ब्लैकस्वान प्रकाशन, हैदराबाद, पृ016।
5. वर्मा, लाल बहादुरः संस्कृति की हमारी सम़झ, इतिहास बोध, इलाहाबाद, पृ0 09।
6. वर्मा, विमलेश कांति व मालतीः भाषा, साहित्य और संस्कृति, पृ032, ओरियंट ब्लैकस्वान प्रकाशन, हैदराबाद।
7. सिन्हा, प्रसूनः भारतीय सिनेमा, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 68
8. वर्मा, विमलेश कांति व मालतीः भाषा, साहित्य और संस्कृति, ओरियंट ब्लैकस्वान प्रकाशन, हैदराबाद, पृ032।
9. थ्योंगो, न्यूगी वाः भाषा का सवाल, इतिहास बोध, इलाहाबाद, पृ0 51।
10. ओझा, लाल बहादुरः देस तलाशता भोजपुरी सिनेमा, मीडियानगर, उभरता मंजर, पृ0 59।
11. वही
12. शर्मा, रंजनाः भोजुपरी लोककथाः सामाजिक संदर्भ, आजकल, जनवरी,2012, पृ013।
13. शर्मा, रंजनाः भोजुपरी लोककथाः सामाजिक संदर्भ, आजकल, जनवरी,2012, पृ012।
14. आजमी, प्रभुनाथ सिंहः पटकथा का सच, मेधा प्रकाशन, दिल्ली पृ010।

डॉ. राजेश सिंह कुशवाहा
एसोसिएट प्रोफेसर, भारतीय जन संचार संस्थान पश्चिम क्षेत्रीय परिसर, अमरावती.